नए वर्ष में !

दृढ़ शक्ति-समन्वित, ओज भरे,
कर कर्म, सतत, संयत-सुन्दर ।
धर दृष्टि-केन्द्र सर्जन जीवन,
रच विश्व मधुर, पावन, भास्वर ।।

जियो जीवन मुक्त हो कर,
धैर्य से साधो स्वयं को ।
जीत लो औदार्य से जग,
क्षमा से हर कल्मषों को ।।

अभय मन में रहे, व्यापक दृष्टि हो,
सुमति-रंजित हो यहाँ विनियोग सारा ।
कल्पना से नित्य गतिमय प्राण हों,
ताल-लय-गर्भित बने हर स्वर तुम्हारा ।।

दूर हों लिप्सा, पिपासा, लोभ, ईर्ष्या,
त्याग का ही भोग हो जीवन हमारा ।
दमन-शोषण से रहे उन्मुक्त यह मन,
गान जीवन का बने सुरभित हजारा ।।

जियो जीवन-राग सहृदय-भाव से,
रस-वृष्टि से पूरित धरा हो ।
जीव सब कल्याणपथगामी बनें
प्रीतिपूरित कण्ठ स्पंदित स्रग्धरा हो ।।

अभ्युदय, मंगल जगत का हो,
हो प्रतिष्ठित मनुज की गरिमा ।
संग समता बंधुता जागे,
और जागे सत्य की महिमा ।।

शोभित हों जीव संकल्पित हो मन,
करे हित-साधन विराट लोक जीवन का ।
ईर्ष्या-द्वेष-कलह-कोलाहल मिटे,
अंकुर फूटे, हरित तंतु नव यौवन का ।।

पुष्कल सौंदर्य-राशि जीवन में बरसे,
बिहसे निसर्ग और अमृत-भाव सरसे ।
मोद और प्रमोद की कान्ति-दिव्य हुलसे,
सरसे सुतृप्ति-भाव, कोई भी न तरसे ।।

समस्त विद्यार्थियों/शोधार्थियों, शिक्षकों एवं शिक्षकेतर अधिकारियों/कर्मियों तथा विश्वविद्यालय परिवार से जुड़े सभी व्यक्तियों को और उनके परिवार को

अंतरराष्ट्रीय नव-वर्ष 2018 की शुभकामनाएँ।

प्रो. गिरीश्वर मिश्र, कुलपति

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा